सितम्बर–अक्टूबर 2020

ग्रामीण शिक्षा केन्द्र

# मोरंगे

बाल पत्रिका

*(कोविड–19 के प्रभाव से सम्बन्धित रचनाओं का विशेषांक)*

# इस बार

**(कोविड–19 के प्रभाव से सम्बन्धित रचनाओं का विशेषांक)**


**5** अब हम कैसे खुश रहें?

**6** सफलता

**8** मेरा तोता

**9** बुआ जी नहीं आई

**10** गुरूजी चप्पलें तो बह गई

**13** स्कूल कब खुलेंगे

**14** अभी तक कुंआरा

**15** समझ

**17** एक आइडिया जिसने जीवन बदल दिया

**19** रूको, मैं मास्क लेकर आता हूँ

**20** बाबा की गोठ

**21** कोरोना में दुकान खाली

**22** स्कूल कब खुलेगा

**सुनीता,** कक्षा–8, संगम


**सम्पादन : विष्णु गोपाल**
**सहयोग :** उदय पाठशालाओं के बच्चे व शिक्षक
**डिज़ाइन :** अश्विनी कुमार पंकज
**प्रूफ़ :** सुरेश चंद
**वितरण :** लोकेश राठौर
आवरण चित्र : **फैजान अली**, उम्र 12 वर्ष, उदय सामु. पाठशाला, जगनपुरा
**वर्ष 12 अंक 123–124**

मोरंगे' का प्रकाशन यात्रा फाउण्डेशन–आस्ट्रेलिया, आशा फोर एज्यूकेशन, पोर्टिकस–नीदरलेण्ड, व एच.टी. पारेख के सहयोग से हो रहा है।

**प्रबंधन**
शुभम गर्ग
निदेशक,
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र समिति

**पत्रिका का पता**
मोरंगे
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र
रणथम्भौर रोड़, सवाई माधोपुर
(राजस्थान) 322001
फोन : 07462–220957
फेक्स : 07462–220460

# परिचय

**प्रिया सैनी,** समूह–रिमझिम, उम्र–7 वर्ष,

'ग्रामीण शिक्षा केन्द्र' राजस्थान राज्य के सवाई माधोपुर जिले में स्थित एक गैर–सरकारी (निजी) संस्था है। ग्रामीण शिक्षा केन्द्र का जन्म 1996 में हुआ था और इसका पंजीकरण 'राजस्थान सोसाइटी अधिनियम–1958' के तहत एक संस्था के रूप में किया गया। जी.एस.के. को संस्थागत बनाने का विचार समुदाय की मांग से उभरा ताकि क्षेत्र की आगामी पीढ़ी जीवन में आजीविका जैसी आवश्यक क्षमताओं और जीवन की कठिनाइयों में निष्पक्ष रूप से स्वस्थ निर्णय लेने में सफल रहे। सामूहिक रूप से हमने रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आस–पास रहने वाले बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए स्कूल शिक्षा कार्यक्रम शुरू करने के बारे में सोचा।

हमने अपना पहला प्रयास और अपनी पहली स्कूली यात्रा की शुरुआत वर्ष 2004 में गाँव–जगनपुरा (खवा) में बबूल के पेड़ के नीचे से की। गाँवों के बच्चों और समुदाय के सहयोग से उदय सामुदायिक विद्यालय की शुरुआत हुई। गाँव वालों ने अपनी जमीन, फसल, श्रम, समय, पैसा और अपने अनुभव से विद्यालय को आगे

बढ़ाया। इसके पश्चात 2007 में बोदल गाँव में, 2009 में फरिया गाँव में और 2014 में गिरिराजपुरा गाँव में उदय सामुदायिक पाठशाला सफलतापूर्वक शुरुआत की गई। ये तीनों उदय पाठशाला रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान की परिधि पर स्थित है। राष्ट्रीय उद्यान में जानवरों, पक्षियों और सरिसृपों की एक विशाल विविधता शामिल है। जिसमें से बाघ सबसे अधिक प्रचलित है। वन्यजीवन का संबंध इन बच्चों और रहने वाले समुदाय के लिए एक महत्वपूर्ण घटक है, जो इनके रहन–सहन, खान–पान, आजीविका, संस्कृति, रीति–रिवाज, बोली–भाषा और व्यवहार के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है। जिसमें इनकी सैंकड़ों पीढ़ियों का ज्ञान, कौशल और अनुभवों का एक विशाल भंडार है। इतने समृद्ध ज्ञान की अनदेखी कर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का दावा करना खोखला साबित होगा। अतः ग्रामीण शिक्षा केन्द्र इनके इसी ज्ञान और परिवेशीय अनुभवों को आधार बनाकर भावी शिक्षा से जोड़ने का प्रयास कर ही रही है।

क्षेत्र में हम पूर्व–प्राथमिक, प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय शिक्षा में काम कर रहे हैं। पिछले वर्षों में 'उदय सामुदायिक पाठशाला' रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आस–पास के सीमांत समुदाय और उनके बच्चों के लिए गुणवत्ता शिक्षा के क्षेत्र में जाना माना नाम बन गया है। स्कूलों ने खुद को समुदायों द्वारा स्वीकृत और सराहनीय गुणवत्तापूर्ण शिक्षा केन्द्रों के रूप में प्रदर्शित किया है। इस मॉडल ने समुदायों को राजकीय विद्यालयों से समान गुणवत्ता की शिक्षा की कल्पना करने और मांगने के लिए प्रोत्साहित किया।

मॉडल को आगे बढ़ाते हुए वर्तमान में हमारे आउटरिच कार्यक्रम – 'विस्तार' को रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आसपास स्थिति गाँवों में वर्ष–2011 में 70 राजकीय विद्यालयों में शुरू किया गया। इसी माध्यम से हम समुदायों, सरकार, शिक्षाविदों, अन्य संगठनों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के पहलुओं को बढ़ावा देने, सीखने और समझने में मदद कर रहे हैं और नई शिक्षा पद्धति की जड़े मजबूत करके उन्हें फैलाने की कोशिश कर रहे हैं। ग्रामीण शिक्षा केन्द्र द्वारा समर्थित उदय पाठशालाओं को शिक्षा में योगदान के लिए राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया जा चुका है। हमारा हर कदम संस्था के विजन और मिशन की तरफ बढ़ रहा है।

इसी कड़ी में एक प्रयास, बच्चों की रचनात्मक, कलात्मक क्षमता और कौशलों को बढ़ावा देने हेतु बाल पत्रिका 'मोरंगे' का सफलतापूर्वक प्रकाषन किया जा रहा है। बाल पत्रिका मोरंगे बच्चों के काम को व्यापक समुदाय तक पहुँचाने और उनसे जुड़ने का मंच प्रदान करती है। हमारे पाठकों और समर्थकों का सहयोग और जुड़ाव हमें लगातार प्रयास करने के लिए प्रेरित करता है।

**धन्यवाद।**

# अब हम कैसे खुश रहें?

**आरती मीना,** उम्र–12 वर्ष, उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा

मेरे घर में 6 समझदार सदस्य हैं। जिनमें मैं भी शामिल हूँ। एक मेरा पापा, भाई, बड़ी बहिन, भाभी, मम्मी और मैं। कोरोना वायरस के कारण लगे लॉकडाउन का हमारे घर में भी बहुत प्रभाव पड़ा है। पहले हमारे घर में हम सब अच्छे से रहते थे। घर का खर्च खेती और ट्रेक्टर की कमाई से चलता था। हमारे ट्रेक्टर बजरी बेचते थे। लेकिन अब हमारे ट्रेक्टर अच्छे से नहीं चल रहे हैं। जगह–जगह पुलिस के नाके लग गये हैं और कोरोना वायरस के कारण मकान बनना भी बंद हो गये हैं। इसलिए अब बजरी कोई नहीं मंगाता। काम बंद होने से घर में कोई भी सदस्य खुश नहीं रहता है।

हमारे लगभग 9–10 बीघा जमींन है, जिसमें गेहूँ बोया था। अब हमारी फसल भी पक चुकी है। जिसे बहन, भाभी और मम्मी काट रही हैं। पर उनसे समय पर कटाई नहीं हो पा रही है। पहले तो हम आदमी (मजदूर) लगाकर फसल कटवा लेते थे। अब कोविड–19 के कारण कोई भी आदमी आने को तैयार नहीं। फसल की कटाई समय पर नहीं होने से वह पक कर खेतों में खिरने (झड़ने) लगी। कोई नहीं मिला तो घर के लोगों ने ही कटाई शुरू कर दी तो पकी फसल और तेजी से खिरने लगी। इसलिए हमारी आधी फसल खेतों में ही खिर गई।

हमारा अनुमान लगभ 70–80 बोरी गेहूँ का था। लेकिन आदमी नहीं मिलने के कारण हम 40 बोरी गेहूँ ही खेतों में से निकाल सके। इस तरह हमें खेती में भी मुनाफा नहीं हुआ। ऊपर से स्कूल भी बंद हो गये। अब हम कैसे खुश रहें?

**रिंकु मीना**, समूह–सितारा, उम्र–13 वर्ष

# सफलता

**अनुष्का सैनी,** कक्षा–8,
उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा

वर्तमान समय में स्कूल, कॉलेज के बंद होने के कारण बच्चों की पढ़ाई पर काफी असर पड़ा है। ऐसे में बच्चे पढ़ाई से जुड़े रहे इसके लिए ग्रामीण शिक्षा केन्द्र के टीचर्स समुदाय में जाकर बच्चों के छोटे–छोटे समूह में शिक्षण कार्य करवा रहे हैं। ऐसे ही रायखेड़ा के केन्द्र पर मैं बच्चों के साथ शिक्षण कार्य करता हूँ। वहाँ पर रोज दो छोटे बच्चे ऋतिका व राहुल आते हैं। ये पढ़ने के लिए आने हेतु बहुत उत्साहित रहते हैं। ये सुबह जल्दी ही नहा धोकर सेंटर पर आ जाते हैं। कभी स्लेट, कलम तो कभी पैंसिल कॉपी लाते हैं। जो कुछ कार्य देते हैं उसे करते हैं, कभी स्वयं से ही कुछ आकृतियाँ बनाते हैं। मतलब उनका सीखना बंद नहीं रहता है। कभी खेलने लग जाते हैं तो कभी बातें करते हैं। एक दिन मैंने देखा कि दोनों बच्चे उनके बड़े भाई द्वारा बनाई गई गाड़ी को चला रहे हैं। मैंने उनसे पूछा तुम गाड़ी क्यों चला रहे हो, पढ़ना नहीं है क्या? तो उनका जवाब था कि हम घर बनायेंगे। ठीक है, तो बनाओ और मैं दूसरे बच्चों के साथ कार्य करने लग गया लेकिन मेरी नजर उसकी अठखेलियों पर भी थी। दोनों बच्चे अपना घर बनाने का सपना पूरा करने में लग गये। राहुल गाड़ी चलाकर मिट्टी वाली जगह पर ले गया। मिट्टी में कुछ कंकर भी थे। कंकर हटाकर अब ऋतिका ट्रोली भरने लगी। जब ट्रोली पूरी भर गई तो गाड़ी चालू की गई। लेकिन ट्रोली में ज्यादा भार और उबड़–खाबड़ वाली जगह होने के कारण ट्रेक्टर उसे नहीं खींच पाया। राहुल लगातार जोर लगाकर निकालने की कोशिश कर रहा था लेकिन सफलता नहीं मिली अब क्या किया जाये। अब ट्रेक्टर खींचने का काम तो राहुल ही कर रहा था पर वह समझ रहा था कि अधिक जोर लगाने से गाड़ी टूट सकती है। दोनों बच्चे कुछ बातें करने लगे। कुछ समय तक बात करने के बाद शायद वे

इस बातचीत के दौरान ट्रोली को निकालने पर मंथन (चर्चा) कर रहे थे। उसकी बात पूरी हुई और उन्होंने निर्णय ले लिया कि हमें क्या करना चाहिए। आगे मैंने देखा कि रितिका ट्रोली में से कुछ मिट्टी निकालकर ट्रोली को धक्का लगाने लगी। ट्रोली में इतना वजन था कि बच्चों के लिए बहुत ज्यादा था। एक–दो बार के प्रयास से सफलता नहीं मिली लेकिन दोनों बच्चे प्रयास कर रहे थे। शायद उन्हें पूर्ण विश्वास था कि सफलता जरूर मिलेगी और अंत में उन्हें सफलता मिली व ट्रेक्टर ट्रोली उस अबड़–खाबड़ वाली जगह से बाहर निकल गई। दोनों बच्चे इस सफलता से काफी खुश लग रहे थे। इससे पता चलता है कि बच्चे किस कुशलता और चतुराई से खेल–खेल में भी वास्तविक जीवन को जी रहे होते हैं।

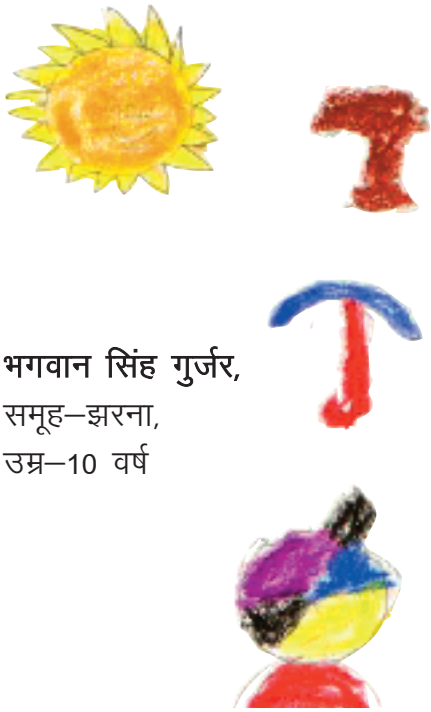

**भगवान सिंह गुर्जर,**
समूह–झरना,
उम्र–10 वर्ष

**जगदीश कोली**, संदर्भ शिक्षक–उदय सामुदायिक पाठशाला कटार–फरिया।

**विहान सहरावत,**
समूह–लहर, उम्र–10 वर्ष

# मेरा तोता

अप्रेल का महिना था लॉकडाउन चल रहा था। हमारे स्कूल का अवकाश भी साथ–साथ चल रहा था। हमारे बाड़े में एक नीम का पेड़ है। एक दिन उसमें एक तोता कहीं से आकर बैठा ही था। मेरी निगाह उस तोते पर पड़ी। उसे उड़ाने के लिए मैंने उस तोते की तरफ अपना हाथ ऊपर किया। वह नहीं उड़ा। वह मुझे उदास–उदास सा भी दिख रहा था। मैंने एक बार फिर उसको उड़ाने की कोशिश की पर फिर भी वह नहीं उड़ा। मैंने धीरे–धीरे अपना हाथ उस तोते की ओर बढ़ाया।

**प्रिया सैनी,** उम्र–9 वर्ष, समूह–रिमझिम

वह फिर भी नहीं उड़ा। इसलिए मैंने उसको पकड़ लिया। तोता मुझे उदास और बीमार सा लग रहा था। मैं उसको वहाँ से उठाकर घर पर ले आई। उसके लिए एक कटोरी में पानी रखा, कुछ अनाज के दाने डाले। उसने एक–दो दाने खाये और उसी जगह पर बैठा रहा। मैं रोज उसको दाना–पानी रखती। वह दो–तीन दिन बाद धीरे–धीरे घूमने लग गया। अब वह ठीक हो गया था। वह कहीं जाता नहीं था। धीरे–धीरे वह हमारा दोस्त बन गया। लेकिन कुछ दिनों बाद एक दिन वह गायब हो गया। मैंने उसको तीन–चार दिन तक खूब ढूंढा लेकिन वह नहीं मिला। मैं अभी तक भी उदास हूँ, क्योंकि मुझे मेरा तोता नहीं मिला।

**लाली गुर्जर**, कक्षा–7, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा।

# बुआजी नहीं आई

भूमिका मीना, उम्र–8 वर्ष, समूह–संगम

लॉकडाउन के समय से ही रिश्तेदारों का आना–जाना बंद था। बहुत दिनों से कोई भी रिश्तेदार हमारे घर नहीं आया था और न ही हम कहीं गये थे। लेकिन राखी के नजदीक आने से धीरे–धीरे एक आस बंधती जा रही थी। मैंने और मेरे परिवार ने सपने सजो रखे थे कि रक्षाबंधन पर बुआ जी आएगी और बड़े उल्लास के साथ राखी बांधेगी। राखी के दिन ज्यों–ज्यों नजदीक आते जा रहे थे हम भी बुआजी को रोज फोन करते, ''बुआजी, आप तो राखी के एक दिन पहले ही आ जाना।'' बुआजी भी आने को लालायित हो रही थी। मम्मी ने भी बुआजी को क्या देना है इसकी पूर्व तैयारी कर ली थी। दिन नजदीक आते गये और राखी का वह पूर्व दिन भी आ गया। कुछ आस–पड़ौस की बहन–बुआयें भी आ चुकी थी। हम भी बुआजी का टकटकी लगाकर इंतजार कर रहे थे। क्योंकि बुआजी को सुबह ही आना था। मम्मी व पापा भी सुबह जल्दी ही खेत से चारा लेकर घर आ गये थे। सुबह से दोपहर हो गई और धीरे–धीरे शाम भी हो गई। लेकिन बुआजी नहीं आई, शाम को बुआजी को फोन किया। वह बोली की आज तो कोई लाने वाला ही नहीं था, घर के सदस्य मोटर साईकिल लेकर माधोपुर चले गये हैं। अब हमारे तो कोई दूसरा साधन भी नहीं है जिससे हम ही जाकर ले आते। ट्रेन का साधन था परन्तु वह भी कोरोना के कारण बंद है। बुआजी उम्र में बड़ी हैं उसको तो कोई लाये तब ही वें आ सकती है। बुआजी ने राखी के दिन आने को कहा अब हम कर भी क्या सकते हैं। हमारे तो कोई मोटर साईकिल भी नहीं है और न ही मेरे पापा को चलानी आती हैं अब राखी का दिन भी आ जाता है। सुबह से शाम तक फोन भी होता है लेकिन बुआजी को तो वही मोटर साईकिल वाली समस्या, ''कोई लाने वाली नहीं है।'' इस तरह हमारी राखी भी सूनी ही रह गई। हमारे सभी के चेहरे भी उदास हो गये।

**आरती गुर्जर**, कक्षा–7, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा।

# गुरूजी चप्पलें तो बह गई

बात ठाकुर जी के मंदिर की है। जहाँ मैं लॉकडाऊन में 10 बच्चों को ग्रामीण शिक्षा केन्द्र की मदद से फ्री ट्यूशन पढ़ाने जाता हूँ। सब के सब पिछड़े और गरीब हैं। शायद समुदाय के पास इससे अच्छी कोई दूसरी जगह हमारे लिए नहीं थी। यों जगह शांत है। शहरों की तरह गाँव के लोग रोज–रोज मंदिर जाने में अपना समय खर्च नहीं करते। लोग अपने खेत, घर जंगल जहाँ पर होते हैं वहीं से ध्यान कर लेते हैं।

आज मैं और मेरा साथी शिक्षक समय से पूर्व केन्द्र पर पहुँचे। मौसम सुबह से ही सूर्य को छिपाए बैठा था। अंधेरे की छटा छाई हुई थीं हम आज बच्चों का बी.

**विशाल बैरवा,** उम्र–7 वर्ष, समूह–लहर

एम.आई. भी लेने जा रहे थे। अचानक तेज बरसात होने लगी, बच्चों को बाहर से अंदर बैठा दिया गया। चारों तरफ से पानी ही पानी आ रहा था। शिक्षक और बच्चों की चप्पलें बाहर लाईन से खुली थी। केन्द्र की जगह ढालू स्थिति में होने के कारण पानी समतल रास्ते की तरफ बहे जा रहा था। जो गाँव के मैन रोड़ से जुड़ा हुआ था। बच्चे सभी अपने–अपने काम में मस्त थे। बच्चों के लिए ये छोटी बात नहीं थी

कि बाहर बारिश हो रही हो और वे उसमें नहाए नहीं। निश्चित ही अंदर का काम भी रोचक था पर बारिश के प्राकृतिक मौसम से शिक्षक की रोचक गतिविधि कब तक मुकाबला करती। 20 मिनट बाद अचानक मुकुट ने बाहर का रूख किया। अभी उसका अनुसरण दूसरे बच्चे करते उससे पहले ही वह जोर से चिल्लाया। गुरूजी, गुरूजी चप्पलें तो बह रही हैं। अब जो होना चाहिए वही हुआ। सभी बच्चे लगे दौड़ने अपनी–अपनी चप्पल लेने। कुछ बच्चे पहले गुरूजी की चप्पलों को लेकर आए तो कुछ बच्चे अपनी–अपनी चप्पलें लेकर आये।

अचनाक मची अफरा–तफरी देख एक अभिभावक ने पूछा, ''गुरूजी ये बच्चे क्यों चिल्ला रहे हैं और क्यों भाग रहे हैं?''

मैंने कहा, ''अजय सिंह जी! चप्पले बहने लगी हैं।''

उन्होंने कहा, ''ठीक है, तो जल्दी से पकड़ो।'' यह कहकर वे भी बाल क्रिडा का आनन्द लेने लगे। सभी बच्चे अपनी चप्पल ढूंढ कर ले आए। चप्पल तो एक बहाना था। उन्हें तो बारिश में नहाना था। सब के सब भीगे हुए थे। फिर भी एक विजेता की भांति मेरे सामने खड़े थे। मैं क्या कहूंगा ये विचार तो किसी के मन में था ही नहीं। होगा भी क्यों? यहाँ किसी का भय थोड़े ही था उनको। सब ठीक है यह सोचकर मैं खुश था। पर बिना कुछ गड़बड़ी के मामला सकुशल कैसे निपट गया? ये विचार मेरे मन में आया ही थी कि तभी झंडू की चप्पले गुमने की खबर आई। झंडू की एक चप्पल पता नहीं पानी में कहाँ चली गई? उसकी दोनों बहने मीनाक्षी व पूजा उदास मन से आकर कहती हैं, ''गुरूजी, झंडू की यहाँ आने से अब तीसरी जोड़ी चप्पल गुम हुई है। बच्चे बी.एम.आई. व प्रोजेक्ट कार्य करने में व्यस्त होने लगे। कोई कह रहा था, ''गुरूजी यहाँ से पानी आने लगा।'' कोई कह रहा था, ''गुरूजी, पानी यहाँ से भी आने लगा।'' बरसात अपना कमाल करके जा चुकी थी। पानी की सतह नीचे की तरफ उतरने लगी। छुट्टी से 5 मिनट पूर्व एक लड़की चप्पल को छोड़ कर चली जाती है जो कि आज केन्द्र पर पढ़ने नहीं आई थी। अचानक पूजा चिल्लाती है कि चप्पल मिल गई। कोई चुपके से आया था और दीवार पर रखकर चला गया। पूजा ने जैसे ही भाग कर वहाँ से चप्पल उठाई तो क्या देखती है। खुशबू भागते हुए अपने घर की तरफ जाती हुई नजर आई। खुशबू ने गोपनीय तरीके से मदद क्यों की ये तो वो जाने पर आज उसने झंडू और उसकी बहनों को बड़े दु:ख से उबार लिया। वर्ना बारिश का मजा किरकिरा हो जाता। बच्चे चप्पलों के बहने की बातें करते और हंसते हुए उसी बहते पानी के साथ–साथ अपने–अपने घर चले गये।

**सुरेश**–शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा एवं विष्णु गोपाल

**अनूप बैरवा,** उम्र–7 वर्ष, समूह–सावन

# स्कूल कब खुलेंगे

मुस्कान मीना, उम्र–9 वर्ष, उदय पाठशाला जगनपुरा

मोबाइल की घंटी बजी, कई पहर
पूछा जाता क्या हाल है सर? क्या हाल है सर?
मार्च, अप्रेल, मई, जून, जुलाई और
अगस्त भी गुजर गया।
न कोई परीक्षा, न ही परिणाम,
फिर भी आगे बढ़ गया, कुछ किया न काम
न कोई चिन्ता, न कोई फिक्र, बिंदासी से,
पूछा जाता क्या हाल है सर? क्या हाल है सर?
कब से आना है, कब खुलेंगे स्कूल?
गर्मी भी निकल गई, ताल–तलैया भी हो गई फुल
इन छः महीनों में जितना सोचा, उससे ज्यादा किया
खेल–खिलौने, गिल्ली–डण्डा सब कुछ तो तोड़ दिया
पढ़ना–लिखना जैसे पीछे छूट गया।
थक–हार गये अब हम सब, पापा–मम्मी की डांटों से
गीत गवाना, पट्टी पढ़ाना, भूल गये अब सीटी बजाना
अब न कोई डर है न कोई बहाना
बताइये सर स्कूल अब कब से है आना?
गाय चरा ली, कर ली रखवाली,
छोड़ भी दी मामा की फुलवारी,
टूटे बैग की बद्दी भी लगवा ली, फटी थी ड्रेस वो भी सिलवा ली
कागज–कॉपी और किताब, सब कुछ तो है मेरे पास,
दादा–दादी, नाना–नानी नहीं है इनके पास
जितने थे सब किस्से सुन डाले, पुरानी रद्दी तक पढ़ डाले,
जन्माष्टमी, रक्षाबंधन जैसे गुड–धानी का त्यौहार,
बंद हो गये जैसे घर–बाहर सारे व्यापार
कोई तो हमें पटरी पर ला दो, सर अब जल्दी से स्कूल खुलवा दो
ऐसे क्या रूठे हो हससे या कोरोना के डर से,
सब कुछ सह लेंगे, दूरी भी रख लेंगे,
बीस तक गिनती भी बोलेंगे, साबुन से हाथ भी धो लेंगे,
मास्क भी है अब तो, मुँह को भी ढक लेंगे
थोड़ा–थोड़ा ही पढ़ लेंगे, मिलकर सब कुछ सह लेंगे,
आखिर अब तो बतला दो, सर जल्दी से स्कूल खुलवा दो।

**बेनी प्रसाद शर्मा**,
शिक्षक,
उदय सामुदायिक
पाठशाला फरिया

**राजेश कुमावत**, शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार–फरिया।

# अभी तक कुंवारा

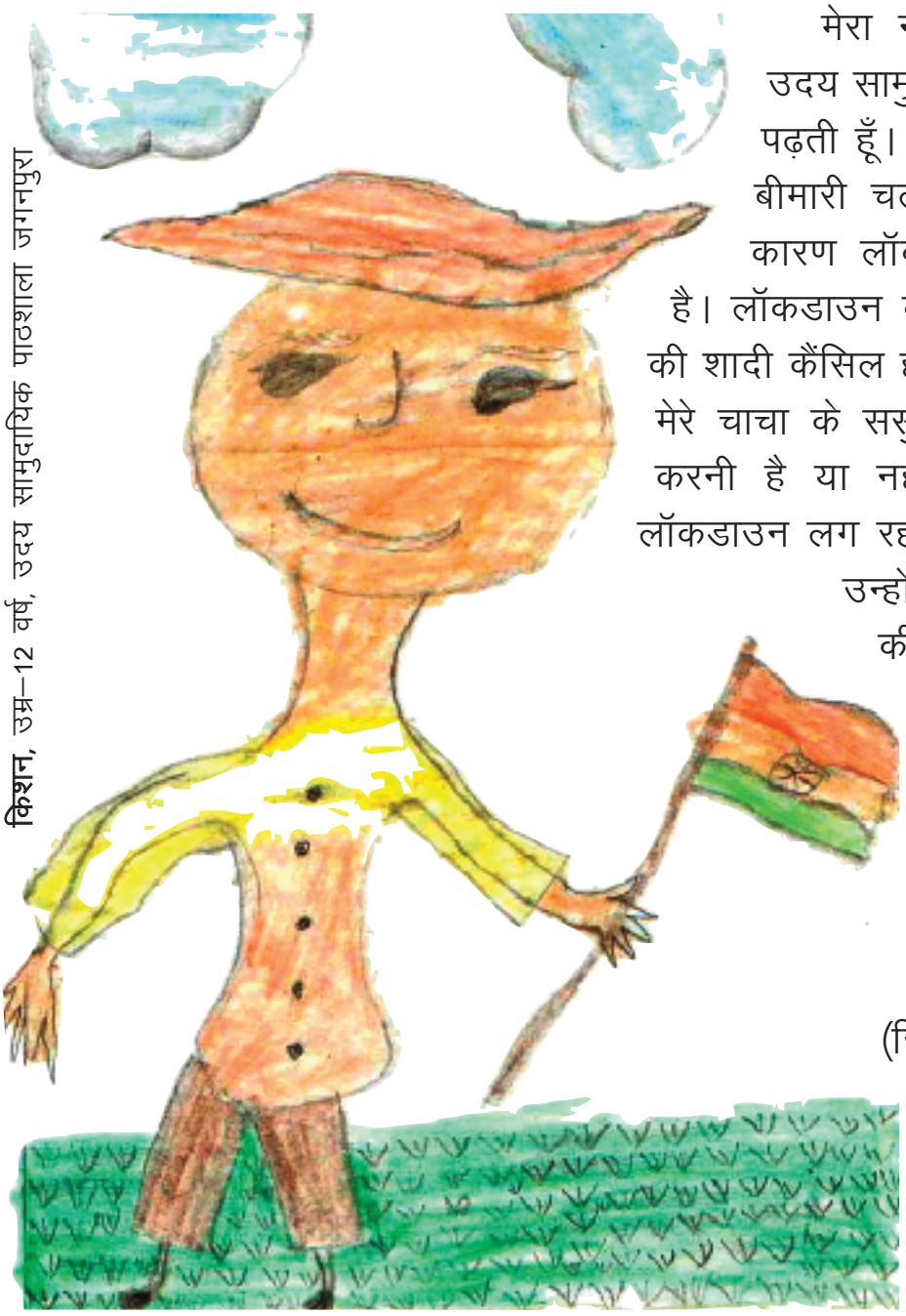

**किशन**, उम्र–12 वर्ष, उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा

मेरा नाम आरती है। मैं उदय सामुदायिक पाठशाला में पढ़ती हूँ। कोरोना वायरस की बीमारी चल रही है। जिसके कारण लॉकडाउन लगा हुआ है। लॉकडाउन के कारण मेरे चाचा की शादी कैंसिल हो गई। मेरे दादा ने मेरे चाचा के ससुर से पूछा, ''शादी करनी है या नहीं करनी? क्योंकि लॉकडाउन लग रहा है।''

उन्होंने कहा, ''मुझे बेटी की शादी करनी है। क्योंकि वह जवान हो गई है।'' फिर मेरे दादा ने भी शादी की हाँ भर दी। मेरे चाचा के ससुर पीली पत्री (जिसके बाद शादी टाली नहीं जा सकती) भेजने ही वाले थे कि लॉकडाउन लग गया। फिर दादा ने किसी से सुना की लॉकडाउन बढ़ता ही जा रहा है। सरकार शादी नहीं होने दे रही है। जब मेरे चाचा की शादी के 6 ही दिन रह गये थे तो फिर चाचा के ससुर ने भी मना कर दिया और मेरे चाचा की शादी रूक गई। सारी तैयारियाँ रखी रह गई। अभी तक मेरा चाचा कुंवारा ही है।

**आरती गुर्जर**, कक्षा–7, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा।

**अमर मीना,** उम्र–12 वर्ष, उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा

# समझ

मैं उदय सामुदायिक पाठशाला में शिक्षिका हूँ। इस समय हमारा देश एक ऐसी महामारी से जूझ रहा है जिसने शिक्षा को पूरी तरह से प्रभावित किया है। बच्चों की पढ़ाई इससे प्रभावित न हो इसके लिए समुदाय में छोटे–छोटे केन्द्र बनाकर बच्चों को पढ़ाने का कार्य आरम्भ किया।

मेरे केन्द्र पर 10 बच्चे आते थे। इनमें फैजान नाम का सांतवी कक्षा का बच्चा भी आता है। वह बच्चा रोज केन्द्र पर पढ़ने आता है और एक दिन भी छुट्टी नहीं करता। लेकिन ईद के तीन–चार दिन पहले से उसका केन्द्र पर आना बंद हो गया। एक दिन वह रास्ते से निकला तो मैंने उसे देखा। मैंने सोचा कोई काम होगा, कोई दिक्कत नहीं है। लेकिन उसको दो–तीन दिन हो गये। मैंने सोचा ईद के बाद ही आए। ईद के दो–तीन दिन बाद भी नहीं आया तो मैंने फैजान के घर कॉल करके पूछा, ''काफी दिन हो गये तुम केन्द्र पर पढ़ने क्यों नहीं आ रहे हो, क्या बात है? तुम्हारी तबीयत तो ठीक है?' फैजान ने कहा, ''मैडम हमारे मेहमान आए हुए थे।'' मैंने कहा कुछ ही घंटों की तो बात है तुम तो आया करो इससे तुम्हारी पढ़ाई खराब हो रही है। फैजान ने बड़ी समझदारी के साथ मुझसे कहा, ''मैडम हमारे मे. हमान अलग–अलग जगहों से आए हैं। ईद होने के कारण घर पर बहुत लोग मिलने भी आए और भीड भी रही।'' मैंने उससे बोला तो क्या हो गया हम केन्द्र पर

फिजिकल डिस्टेसिंग का ध्यान रखते हुए शिक्षण कार्य करवाते हैं। फैजान बोला, ''मैडम हमारे यहाँ अलग–अलग जगहों से रिश्तेदार आए थे। ईद होने के कारण घर पर भी काफी भीड़ थी। मैं बहुत से लोगों से मिला। मैंने टीवी, अखबार और लोगों को चर्चा करते हुए सुना है कि यह कोरोना संक्रमण एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में बड़ी आसानी से हो जाता है। बड़े–बड़े शहरों में यह बीमारी बहुत ज्यादा फैल रही है। इसलिए मैंने सोचा कि इन लोगों में से किसी को यह बीमारी हुई तो मेरे द्वारा यह केन्द्र पर किसी को ना हो जाए। इसीलिए मैंने केन्द्र नहीं आने का निर्णय लिया।''

मैं आश्चर्य में पड़ गई कि सातवीं क्लास में पढ़ने वाला छोटा सा बच्चा अपनी परवाह ना करते हुए दूसरों के बारे में इतना सोच सकता है। विचारों के प्रवाह के बीच फैजान की आवाज कानों में गूंजी, ''मैडम क्या हुआ? तब फिर मैंने उससे पूछा कि तुम्हारे पापा भी तो गाड़ी चलाते हैं। वह भी अलग–अलग तरह के लोगों से मिलते हैं। अलग–अलग जगह पर जाते हैं फिर तुम केसे सुरक्षा बनाते हो? फैजान ने कहा, ''मैडम मेरे पापा जैसे ही घर आते हैं घर के बाहर बनी पानी की टंकी के पानी से नहाकर, कपड़े बदलकर ही घर में घुसते हैं।'' मैं उसकी सारी बातें सुनकर बहुत खुश थी कि बच्चे भी कोराना के प्रति सजगता बरत रहे हैं।

कोरोना के प्रति बच्चों को दी गई जानकारियों को अपनाते और उनका पालन करते हुए देखकर मुझे बड़ा गर्व महसूस हुआ। मैं एक ऐसे बच्चे की शिक्षिका हूँ जो समझदारी के साथ अपने ही नहीं अपितु दूसरों की भी सुरक्षा का ध्यान रखता है।

**कुसुम समादिया**, शिक्षिका, उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा।

**सपना बैरवा,**
उम्र–10 वर्ष,
समूह–सूरज

# एक आइडिया जिसने जीवन बदल दिया

**नौरतन कुमार,**
कक्षा–8,
राज. विद्यालय
जामुलखेड़ा

कोरोना महामारी ने जहाँ पूरे विश्व की अर्थव्यवस्था की कमर तोड़ दी। कई उद्योग धन्धे चौपट होने की कगार पर पहुँच गये। इसी बीच मैं आपको एक ऐसे व्यक्ति की दास्तान बताऊँगा जिसका नाम रतन है। जिसकी उम्र लगभग 40 वर्ष है और वह कक्षा 4 तक ही पढ़ा है। जिससे मैंने लगभग 20 मिनट बात की। उसने बताया कि वह लोकडाउन से पहले अपने चार बच्चों व पत्नी के साथ जयपुर में मजदूरी का काम करता था। लोकडाउन की वजह से मजदूरी मिलना भी बंद हो गई। इसी बीच वह अपने गाँव आ गया और वहीं मजदूरी करने लगा। एक दिन रतन मजदूरी की तलाश में पास के शहर में गया, पर कोई मजदूरी नहीं मिली। गहरी चिंता में बैठा रतन आते–जाते लोगों को देख रहा था। तभी उसने देखा की एक व्यक्ति ठेले पर चने के भूंगड़े बेच रहा था। रतन उसके पास गया और भूंगड़े का भाव पूछा, तो उसने 100 रूपये किलो बताए। रतन भाव सुनकर चौंक सा गया। सौ रूपये किलो! मानो उसने इसके भाव अपनी जिंदगी में पहली बार सुने हों। उस दिन उसे कोई मजदूरी नहीं मिली और घर जाते समय उसे एक

विचार आया।

अगले दिन वह गाँव के किराने की दुकानों पर गया आर पता किया की अभी चने का क्या भाव है? दुकानदारों ने अच्छे से अच्छे चने का भाव 40 रूपये किलो बताया। फिर वह चने के भूंगड़े सेंकने वाले की दुकान पर पहुँच गया। रतन ने भूंगड़े सेंकने के लिए बातचीत की तो दुकानदार ने 10 रूपये किलो में अच्छे से अच्छे से भूंगड़े सेकने को कहा। अब रतन का थोड़ा आत्मविश्वास बड़ा और उसने ठान लिया कि वह भी भूंगड़े बेचेगा। इसी आत्मविश्वास के साथ वह अपने घर लौट आया। पत्नी के साथ अपनी सारी योजना साझा की। रतन ने अपनी पत्नी को बताया कि भूंगड़े बेचने में मुनाफा अच्छा है। 40 रूपये किलो चने हैं जो बड़ी आसानी से कहीं पर भी मिल जाते हैं। 10 रूपये किलो उनकी सिकाई है। इसके अलावा कोई खर्चा नहीं है। यहाँ तक की यदि वह 10 दिन भी नहीं बिके तो भी सब्जी की तरह खराब होने की दिक्कत नहीं है। अगर मानो बिल्कुल भी नहीं बिके, तो थोड़े–थोड़े करके खुद ही खा लेंगे।

आखिरकार बड़ी चर्चा के बाद भूंगड़े बेचने के धंधे पर सहमति बन ही गई। रतन गाँव में एक किसान के पास गया जिस पर उसको विश्वास था और अपनी सारी योजना उसको बताई। रतन ने 10 किलो चने लिए और कहा पैसे 2 दिन बाद दे दूंगा। रतन किसान से चले लेकर घर आया और अपनी भतीजी की साईकिल को लेकर शहर में भूंगड़े सिकाने के लिए चला गया। दोपहर 2 बजे तक वह भूंगड़े सिकवाकर अपने गाँव की ओर लौट रहा था। तभी उसके मन में विचार आया क्यों न मैं, भूंगड़े यहीं से बेचना शुरू दूं। क्योंकि शहर से उसके गाँव के बीच में 3 गाँव पड़ते हैं और फिर उसने भूंगड़े बेचना शुरू कर ही दिया। आवाज सुनकर बच्चे, बूढ़े और औरतें आती, भाव पूछती कोई भूंगड़े चखती और लेती भी। उसने भूंगड़े की कीमत 100 रूपये किलो से बिल्कुल कम नहीं की। इसी तरह उसके भूंगड़े बिकते गये और उसका आत्मविश्वास बढ़ता गया। शाम 7 बजे तक 900 रूपये के भूंगड़े बेचकर खुशी–खुशी अपने घर आ गया। पत्नी को सारी बात बताई, तो वह भी बहुत खुश हुई। अब उसने चने की मात्रा को धीरे–धीरे बढ़ाना शुरू कर दिया। आस–पास के गाँवों में भूंगड़े बेचता रहा। 20 दिन बाद उसने 15 हजार की एक पुरानी मोटर साईकिल खरीद ली। इस पर एक हॉर्न लगवा लिया। (मारवाड़ के भूंगड़े ले लो, मारवाड़ के भूंगड़े ले लो) जिससे लोगों को उसके आने का पता चल जाए। आजकल वह प्रतिदिन 70–75 किलो तक रोज भूंगड़े बेच देता। अब आगे उसका चने के साथ मूंगफली, मसाले के दाने, मक्के के फूले आदि भी बेचने का प्लान है।

**बेनी प्रसाद शर्मा**, शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार–फरिया।

# रुको, मैं मास्क लेकर आता हूँ

**निकिता मीना** उम्र–10 वर्ष,
उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा

यह बात मंगलवार दिनांक 11.08.2020 की सुबह 8 बजे रांवल केन्द्र पर पढ़ने वाले छात्र विष्णु की है। आज वह चौथी कक्षा का नया कोर्स लेकर आया था। अन्य दिनों की अपेक्षा आज उसका पढ़ने का उत्साह देखने को मिल रहा था। इस हड़बड़ी में आज वह मास्क लगाकर आना भूल गया था। मैं और मेरा साथी शिक्षक जैसे ही केन्द्र पर आकर गाड़ी खड़ी करते हैं तो देखते हैं कि विष्णु अचानक केन्द्र से घर की और भागता है। हमने अन्य बच्चों से पूछा, ''ये क्यों भाग रहा है?'' तो उसके साथी ने बताया कि हमें नहीं मालूम। थोड़ी देर में क्या नजारा देखते हैं कि वह एक थैली में अनाज लेकर आता है। बच्चे कहते हैं गुरूजी वो जा रहा, विष्णु। हमने देखते ही कहा, अरे! कहाँ जा रहा है? गुरूजी रूको, मैं मास्क लेर आता हूँ। मुझे उसकी थैली में अनाज देखकर आश्चर्य हुआ। जब वह वापस आया तो मैंने पूछा ये मास्क कितने का दिया। तो उसने बताया 10 रूपये का। तो तू कितने मास्क ले आया भाई? गुरूजी तीन, पहला रूपये में, बाकी दो बार अनाज से लेकर आया हूँ। मैं उसकी कोरोना के प्रति इतनी सावधानी देखकर खुश हुआ।

**सुरेश चंद**, शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा।

# बाबा की गोठ

एक दिन हम सब घरवाले शाम को बैठे हुए थे कि मेरे दादा जी ने कहा, ''अब सब फ्री हैं, क्यों न अगले महीने भैरूजी की गोठ कर लें?'' क्योंकि अभी मौसम भी अच्छा है और मेरे पापा जो कि अजमेर रहते हैं, वो भी छुट्टी लेकर आने वाले थे। हम लोगों ने दाल–बाटी, चूरमा की रसोई का प्लान बना लिया था। मेरी मम्मी और दादी ने छाने थाप लिये थे। उस समय जब हम स्कूल में जा रहे थे तो हमारे गुरूजी बता रहे थे की एक बीमारी चल रही है जिसका नाम है 'कोरोना'। यह एक–दूसरे के छूने से फैलता है। जब तो हमने हल्के में लिया। लेकिन जब बीमारी ज्यादा फैलने लगी तो हमारी छुट्टियाँ कर दी गई। मैंने सोचा कि, ''अब तो हम गोठ में बड़े मजे करेंगे व पढ़ाई की भी टैंशन नहीं।''

जब मोबाइल पर सुना की यह खतरनाक बीमारी है इससे लोग मर रहे हैं और सरकार ने भी लॉकडाउन की घोषणा कर दी है। जिसकी वजह से मेरे पापा को आने के लिए साधन नहीं मिला। बाहर से आने–जाने वालों के लिए भी रोक लगा दी। परिवार वालों ने बाबा की गोठ कैंसिल कर दी। यह सुनकर हम सब उदास हो गये। ना गोठ हुई ना पढ़ाई। लगता है अब अगले साल ही गोठ होगी और शायद पढ़ाई भी।

**पवन गुर्जर**, कक्षा–8, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा।

**सोनाक्षी शर्मा**,
कक्षा–5,समूह–सावन

# कोरोना में दुकान खाली

हमारा गाँव आमली स्टेशन से लगभग 2 किलोमीटर दूर है। अगर गाँव में कोई छोटी–मोटी चीजों की जरूरत होती है तो या तो हमें स्टेशन जाना पड़ता है या फिर सवाई माधोपुर। इन सबके बीच साधनों की भी बड़ी समस्या है। इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए हमने गाँव में एक छोटी सी दुकान लगा ली। इसमें हम रोजमर्रा की चीजें व बच्चों से संबंधित खाने की चीजें रखते थे। मार्च माह में कोरोना के कारण लोकडाउन लग गया उस दौरान सभी जगह बाजार बंद हो गये। चारों और साधन बंद हो गये। गाँव के लोगों के पास अब कोई रास्ता भी नहीं था कि सामान दूर जाकर ला सके। बाहर जाते तो पुलिस का भी डर, साथ ही दुकानवालों ने भी सामान महंगा कर दिया। हमारी दुकान में सामान उसी रेट में मिलता था। इस कारण लोग हमारी दुकान पर ही आते थे। धीरे–धीरे हमारी दुकान से सामान कम होता गया। बाहर से सामान भी नहीं ला सकते थे। क्योंकि न तो सामान आसानी से मिल सकता था और यदि चोरी–छिपे मिल भी जाये तो बहुत महंगा मिलता था। कोरोना का प्रभाव धीरे–धीरे बढ़ता गया। इस दौरान हमारी दुकान से भी सामान धीरे–धीरे समाप्त होता गया। जिस दुकान से हमारे परिवार का छोटा–मोटा खर्चा चल जाता था उसको कोरोना ने छीन लिया। हमारी दुकान अभी भी दौबारा शुरू नहीं हो पाई है।

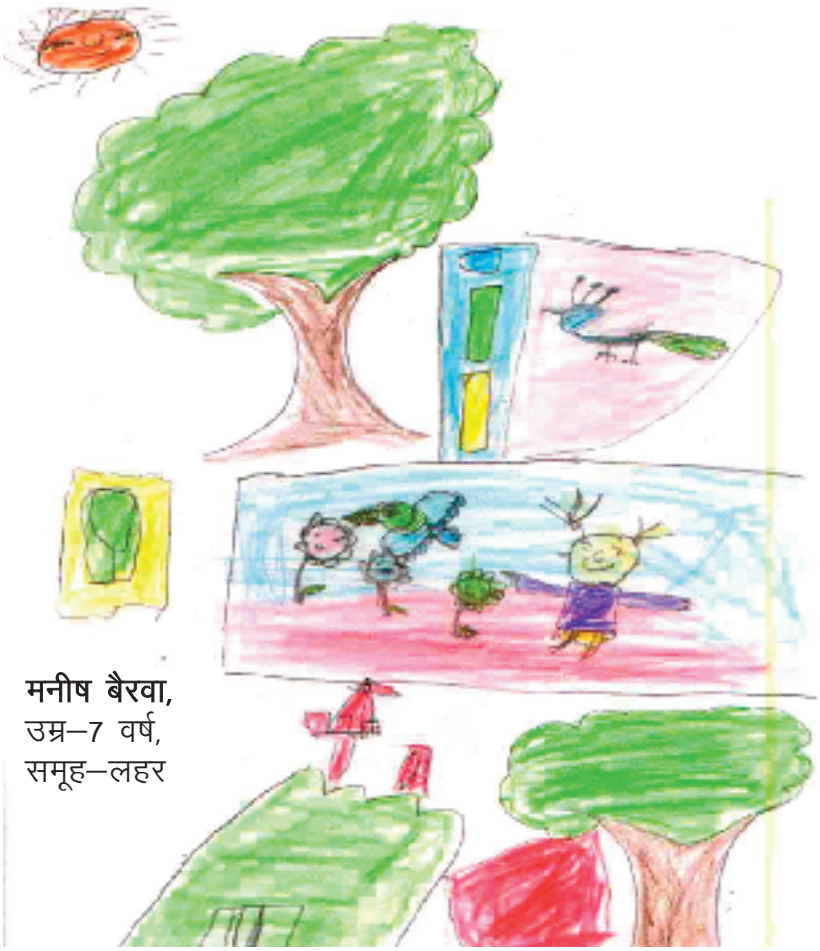

**मनीष बैरवा,**
उम्र–7 वर्ष,
समूह–लहर

**पवन गुर्जर**, उम्र–13 वर्ष, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा।

# स्कूल कब खुलेगा

16 मार्च को जैसे ही सूचना आई कि 'बच्चों की 30 मार्च तक के लिये छुट्टी कर दो और शिक्षक जो हैं स्कूल पर रहकर कार्यशाला करेंगे।' हमने सोचा कि कुछ समय पश्चात बच्चों को बुला लेंगे और उनकी पढाई और वार्षिक मूल्यांकन फिर से आरंभ हो जायेगा। पर ऐसा नहीं हुआ। 5 दिन बाद सूचना आई कि शिक्षकों की भी छुट्टी कर दी गई है। बच्चों ने भी सोचा था कि कुछ समय बाद फिर स्कूल खुल जायेंगे। लेकिन ऐसा नहीं हुआ और एक के बाद एक सरकारी आदेश से लॉकडाउन बढता रहा। बच्चे स्कूल आने के लिए जिद करने लगे।

कुछ बच्चों का तो कहना था, 'हमें खेल सामग्री दे दी जाये। जिससे हम स्कूल में खेल सकें।' कोराना के प्रसार के कारण इसकी भी हमें स्वीकृति नहीं थी। बच्चों को साफ तौर पर मना कर दिया गया कि इस संक्रमण के दौरान बच्चे स्कूल नहीं आ सकते।

कुछ बच्चों ने कहा, 'तो फिर हमें फुटबॉल दे दी जाये। ताकि हम घर पर ही खेल सकें।' इसके लिए भी हमने मना की। बच्चे हताश होकर चले गये। जब भी मैं स्कूल की तरफ आता हूँ तो कुछ बच्चे स्कूल के इर्द गिर्द ही घूमते मिलते हैं। उनको काफी समझाया।

उन्होनें कहा, 'गुरूजी घर पर हमारा मन नहीं लगता है।' कुछ बच्चे तो सुबह जल्दी दौड लगाने आते थे। जब भी समुदाय में जाता हूँ तो बच्चो का यही कहना है कि हमारा स्कूल कब खुलेगा? एक लडकी भूमिका फोन करके पूंछती है, 'स्कूल कब खुलेगा। आप हमारे घर आना।' उसके पापाजी कहते थे कि यह रोज यही बात कहती रहती है।

अब बच्चों को कौन समझाए कि इस सवाल का तो सरकारें भी ठीक–ठीक जवाब नहीं दे पा रही हैं।

**मानसिंह सिर्रा**, शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा।

**चंद्रमुखी सैनी**, उम्र–9 वर्ष, समूह–सितारा

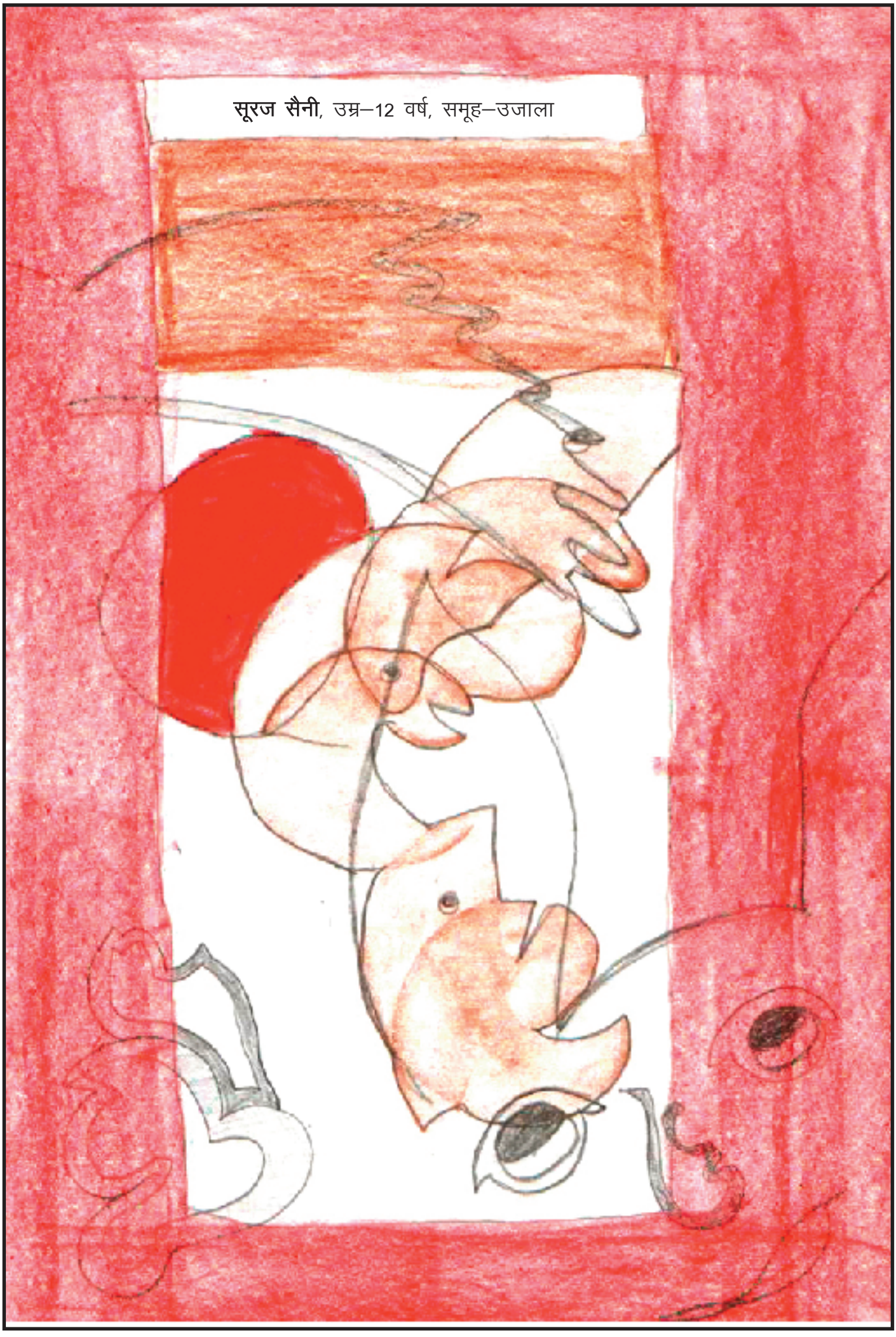

**सूरज सैनी**, उम्र–12 वर्ष, समूह–उजाला